जवेरों की नहरें (महल)

नक्शा नं. 76 (अ) जवेरों की नहरों (महलों) के 9 फिरावे

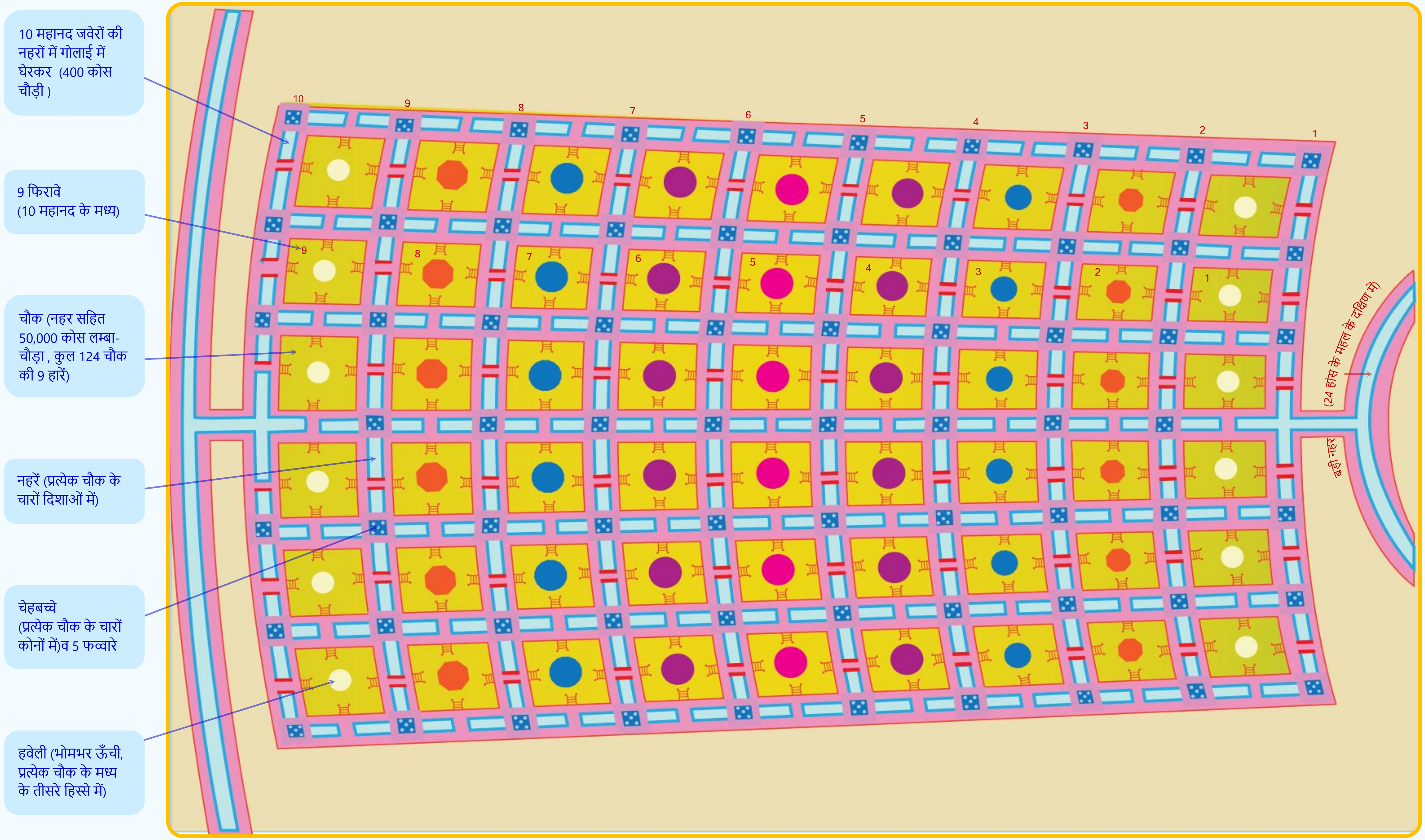

नक्शा नं. 76(ब) जवेरों की नहरों के नौ फिरावे

नौवां	आठवां	सातवां	छठा	पाँचवा	चौथा	तीसरा	दूसरा	पहला	फिरावा
4	8	16	32	64	32	16	8	4	भोम व पहल

नक्शा नं. 77 जवेरों की नहर : चार पहल की हवेली की शोभा

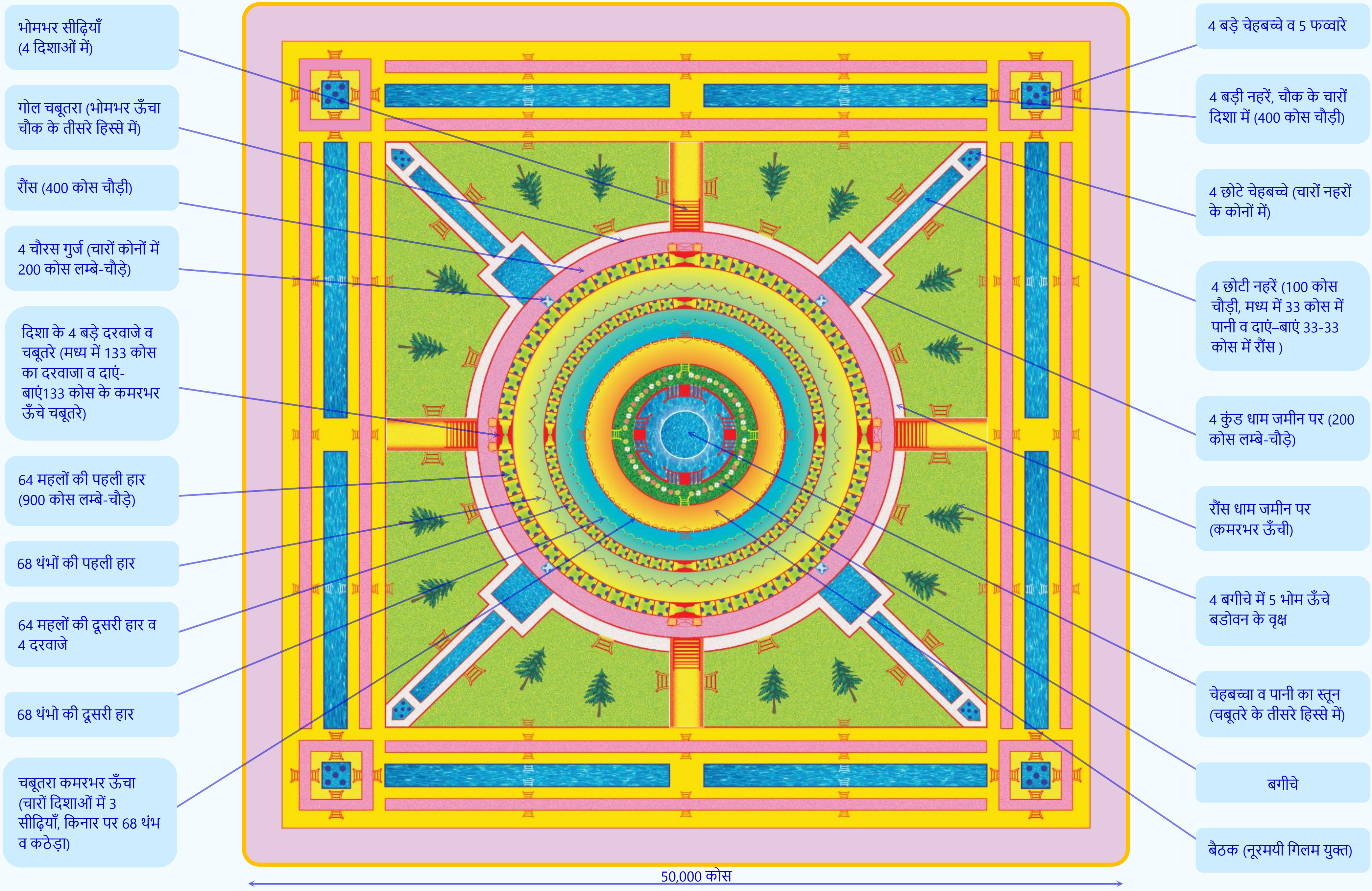

4 पहल की हवेली की अन्दर की शोभा

4 पहल की हवेली की चाँदनी की शोभा

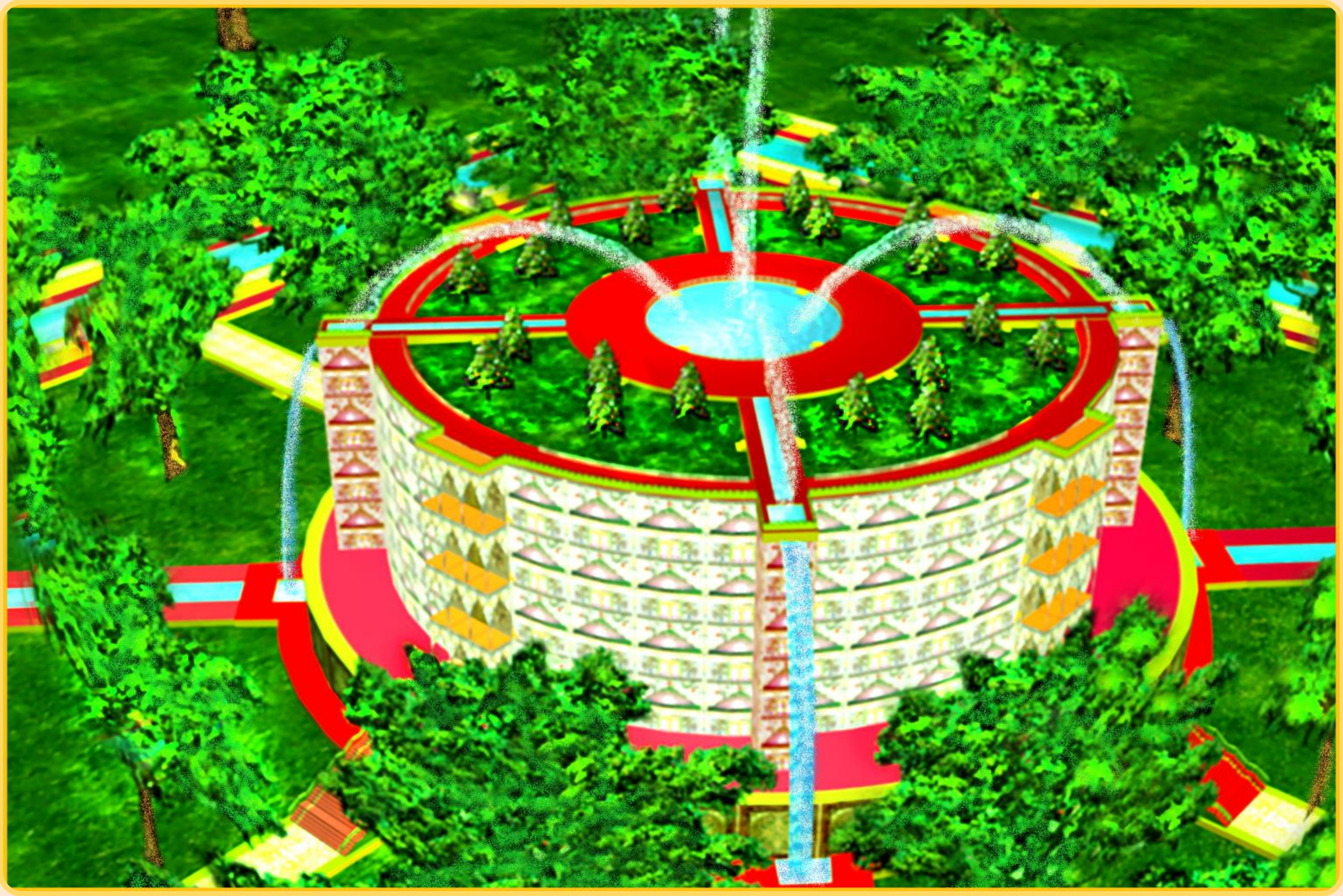

नक्शा नं. 78 जवेरों की नहर : हवेली में महलों की शोभा

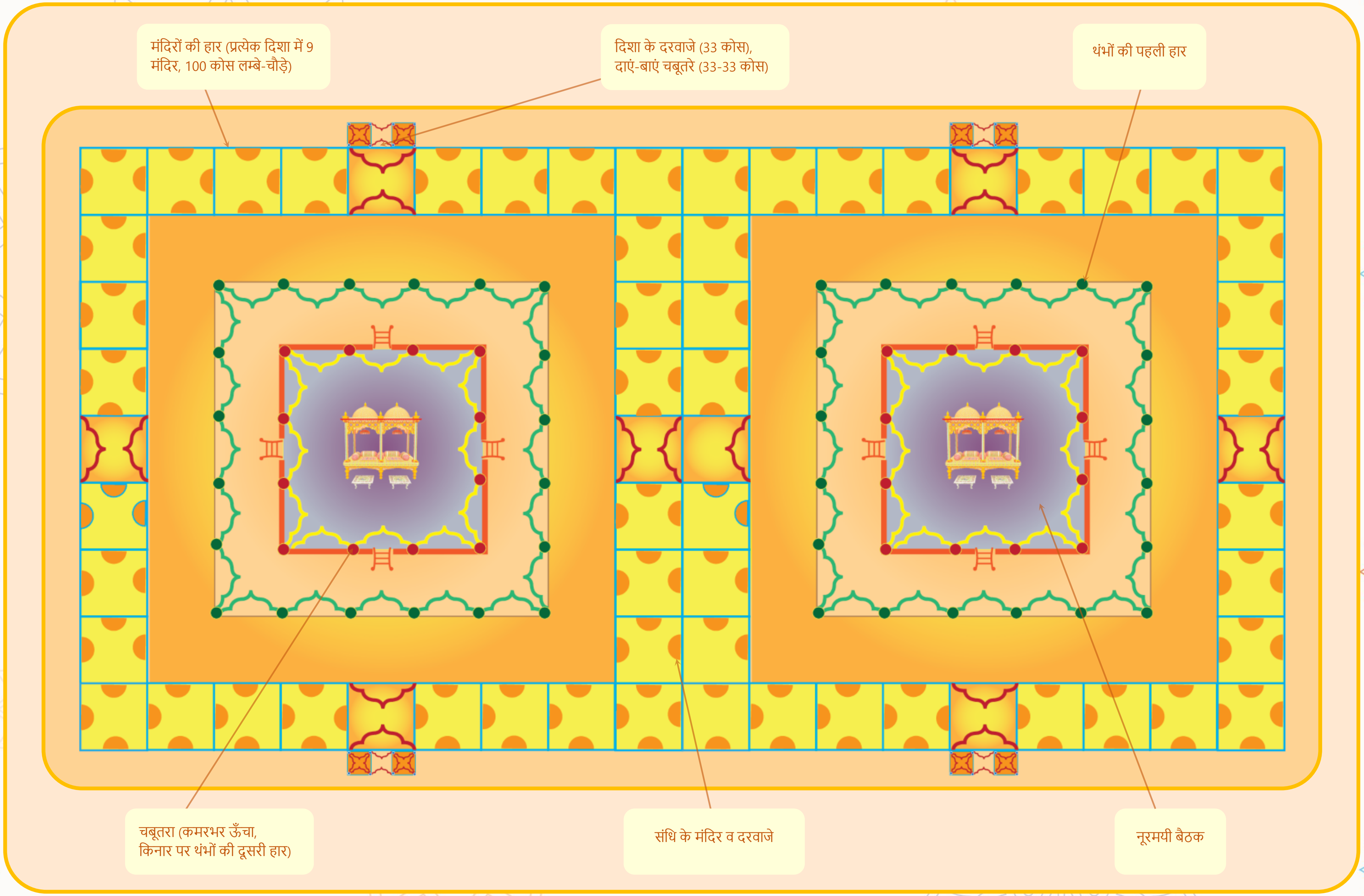

हर जातों मोहोल जुदे जुदे, जुदी जुगतें पानी चलत ।
जुदी जुदी जुगतें कारंजें, क्यों कर कहूं एह सिफत ।।

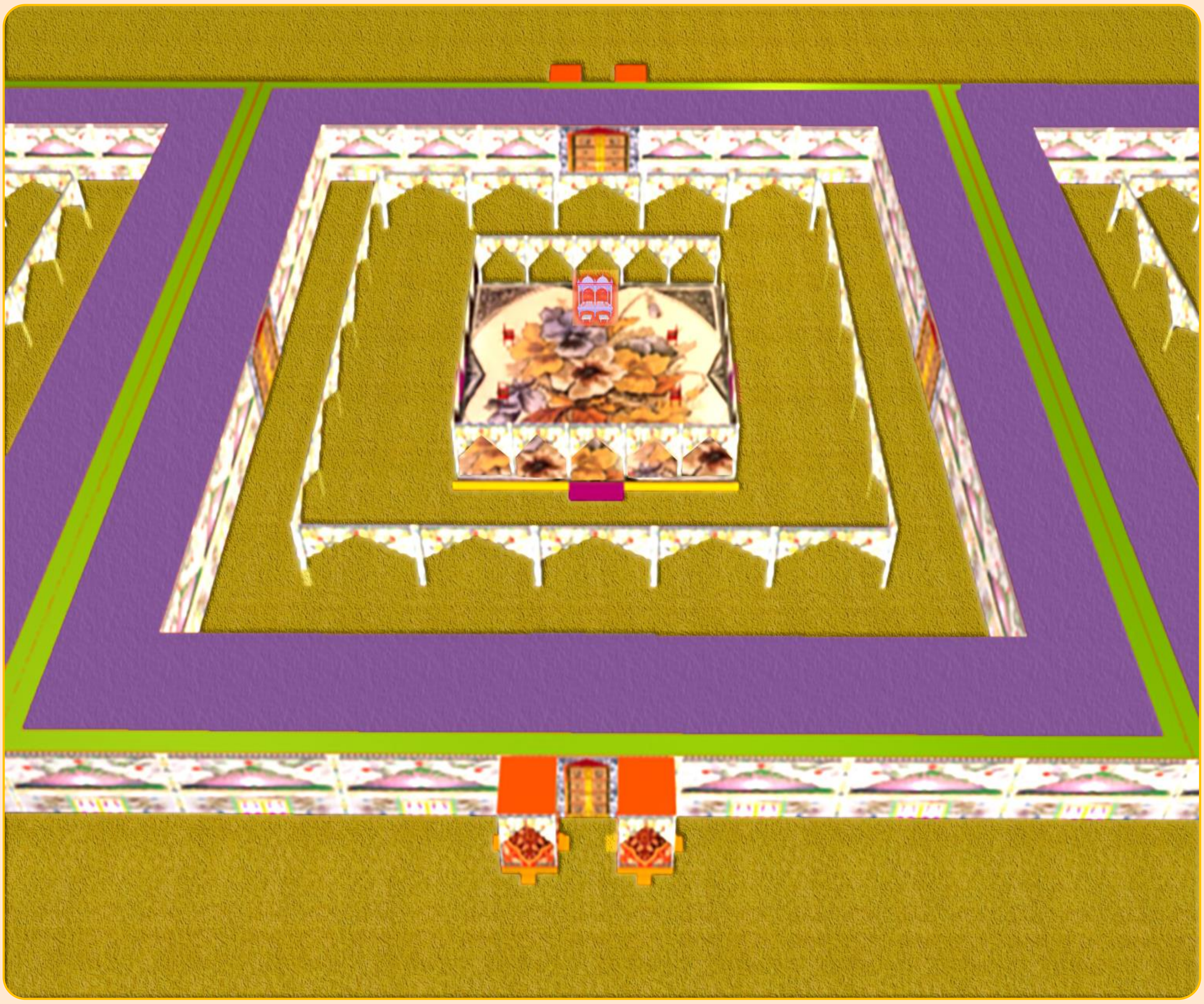

इन बड़े मोहोल सुख नेहेरों के, हमें कब देओगे खसम ।
मांगे मंगाए जो देओ, सब हुआ हाथ हुकम ।।

नक्शा नं. 79 जवेरों की नहर : आठ पहल की हवेली की शोभा

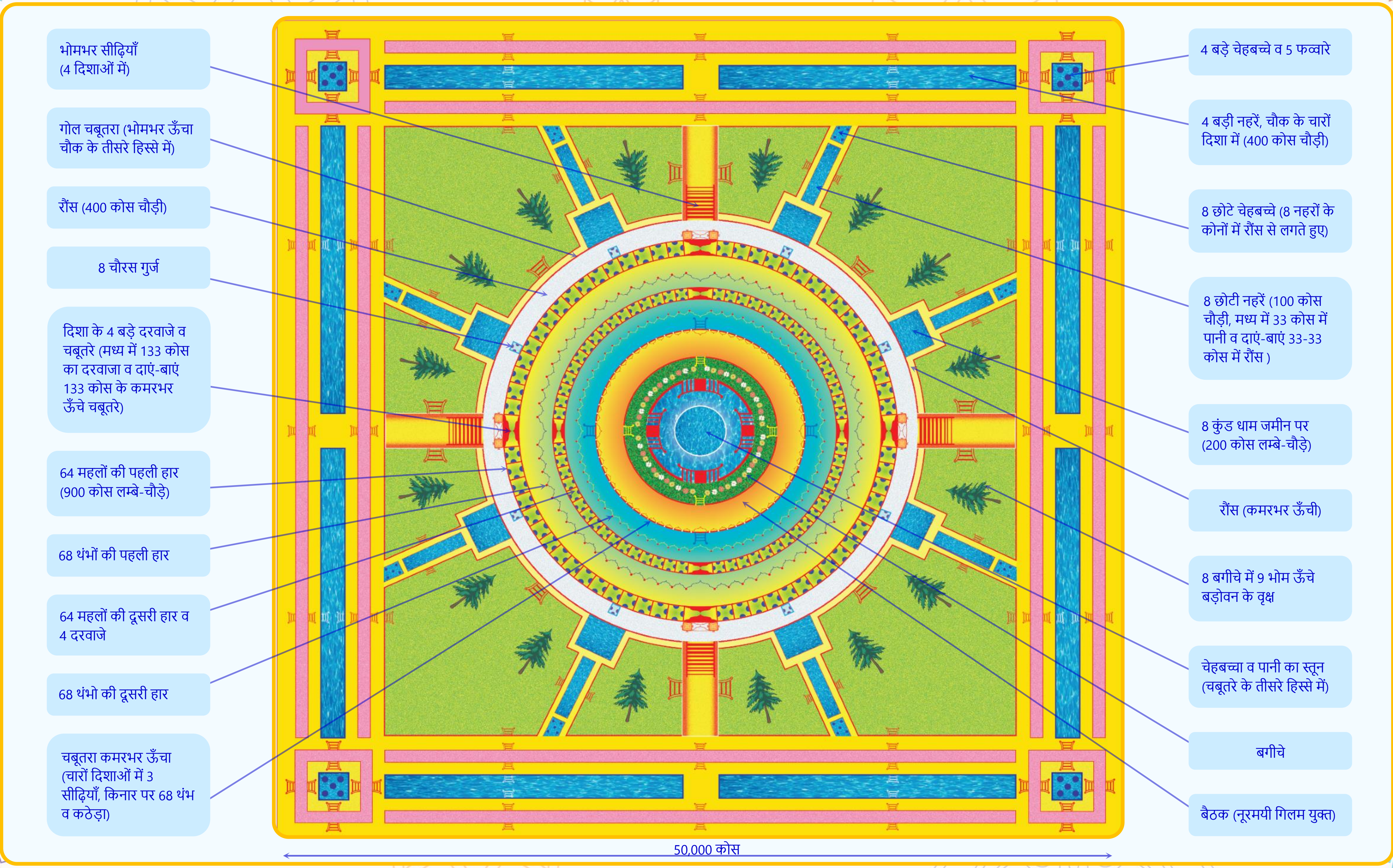

नक्शा नं. 80 जवेरों की नहर : आठ पहल की हवेली की चाँदनी की शोभा

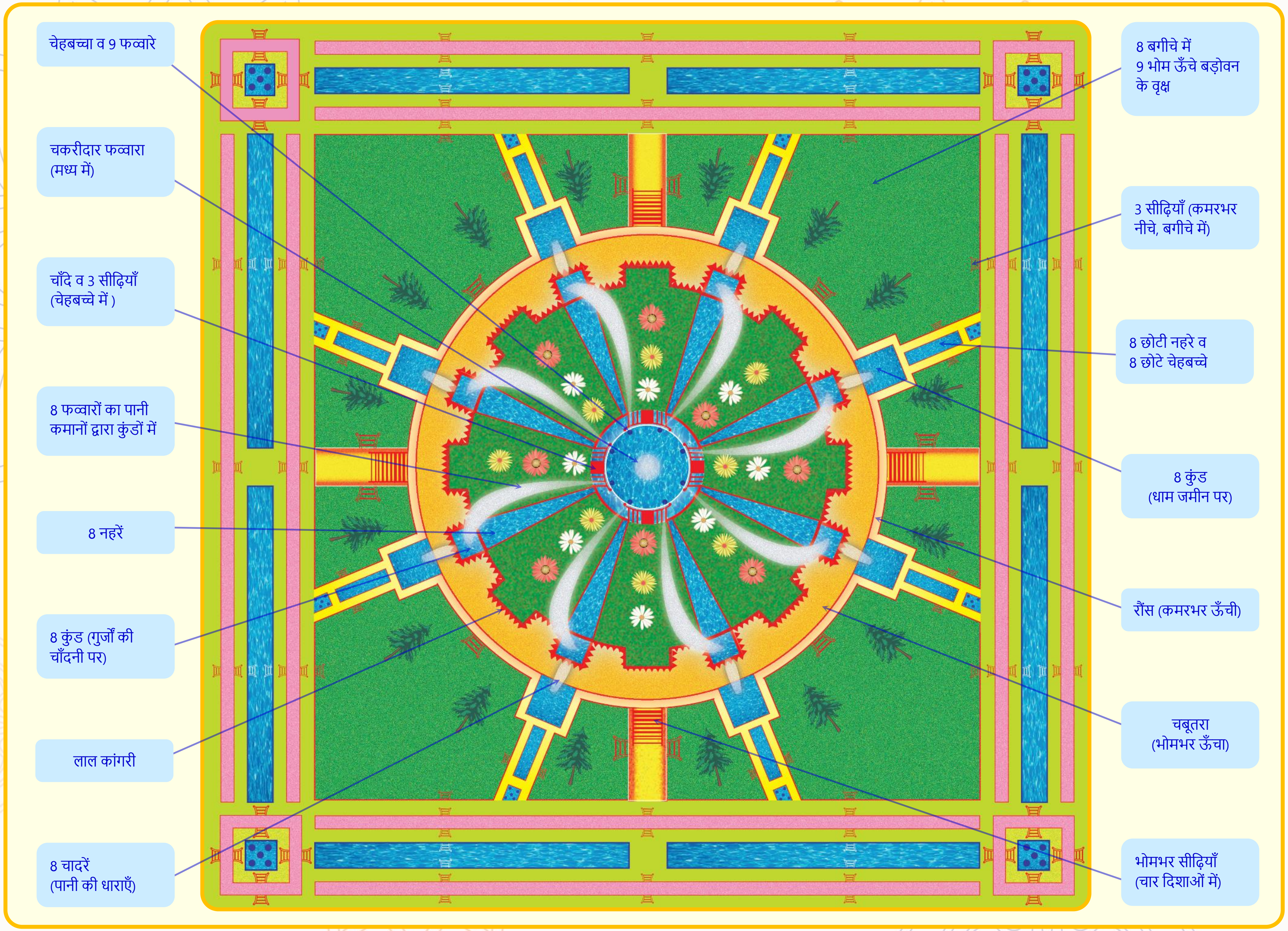

अब नेहेरें बरनन तो करूं, जो कछू होए हिसाब।
मोहोल मोहोल बीच कै कुंड बने, कै कारंजें छूटें ऊंचे आब।।

यों कई नेहेरें बीच सेहेरन के, इन सेहेरों कई मोहोलात।
हर मोहोलों कई बैठकें, ए सोभा कही न जात।।

नक्शा नं. 81 जवेरों की नहर : सोलह पहल की हवेली की शोभा

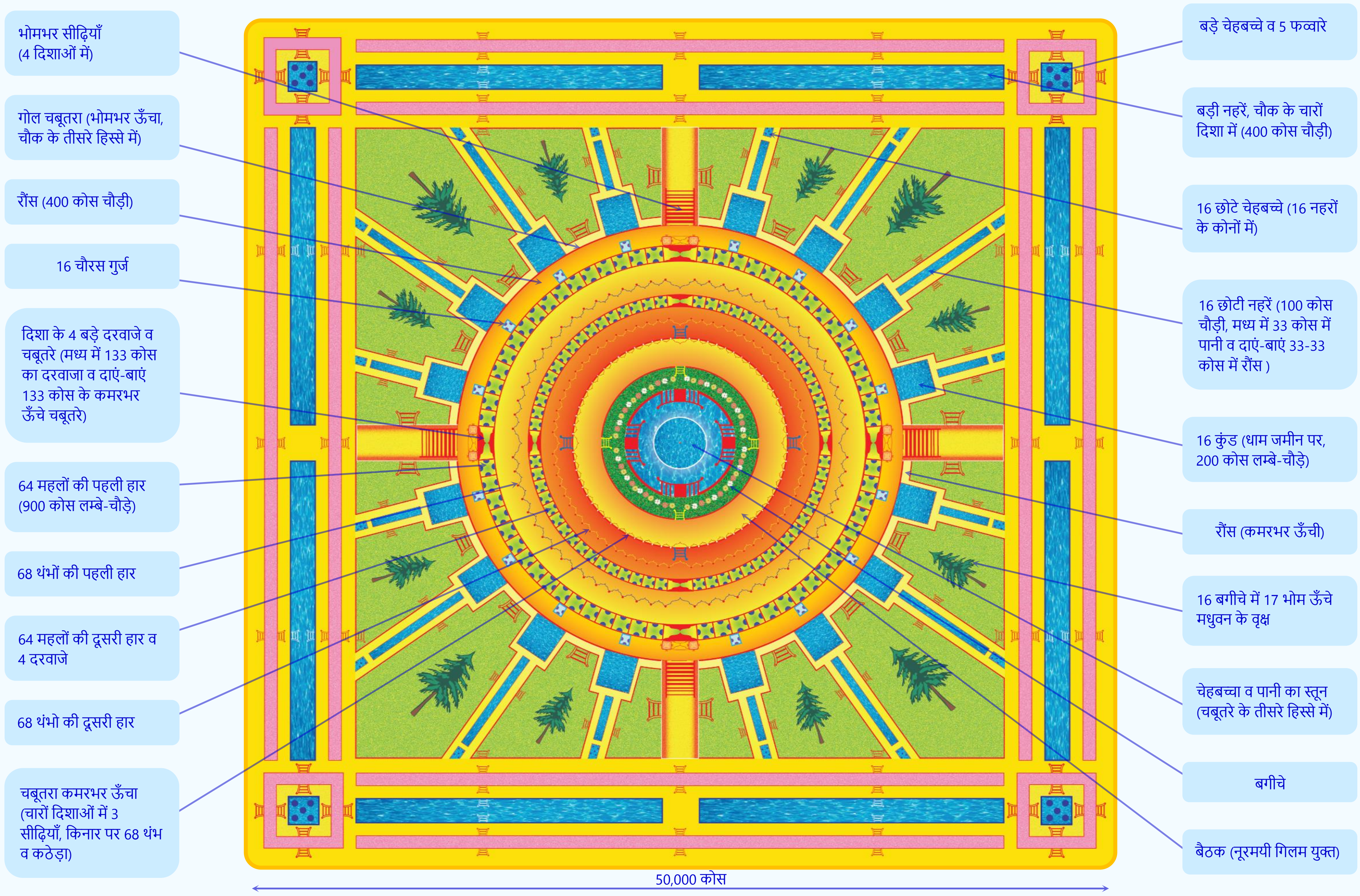

नक्शा नं. 82 जवेरों की नहर : बत्तीस पहल की हवेली की शोभा

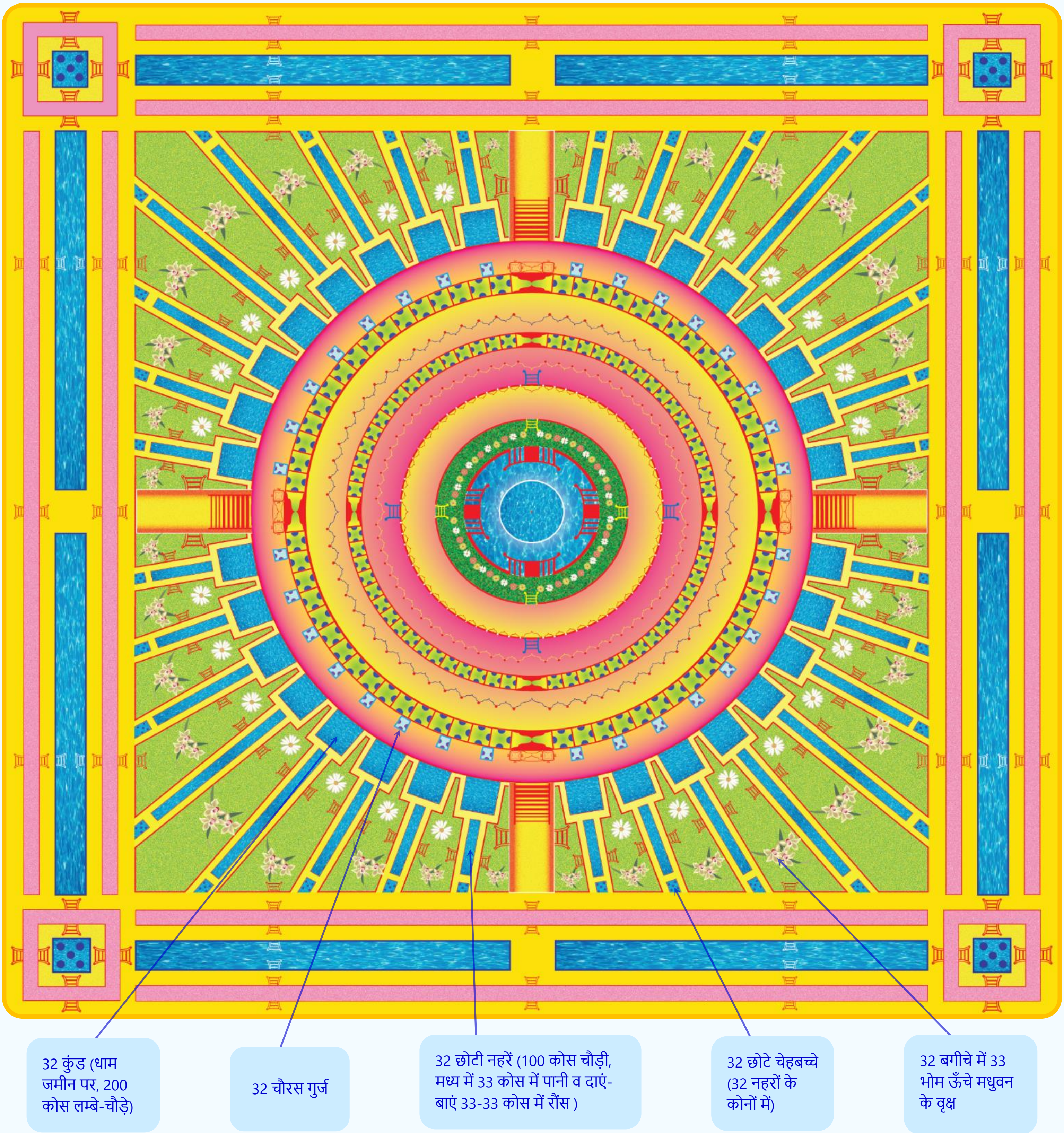

कई चलत चक्राव ज्यों, कई आड़ी ऊंची चलत ।
कई चलत मोहोलों पर, कई मोहोलों से उतरत ।।

नक्शा नं. 83 जवेरों की नहर : चौसठ पहल की हवेली की शोभा

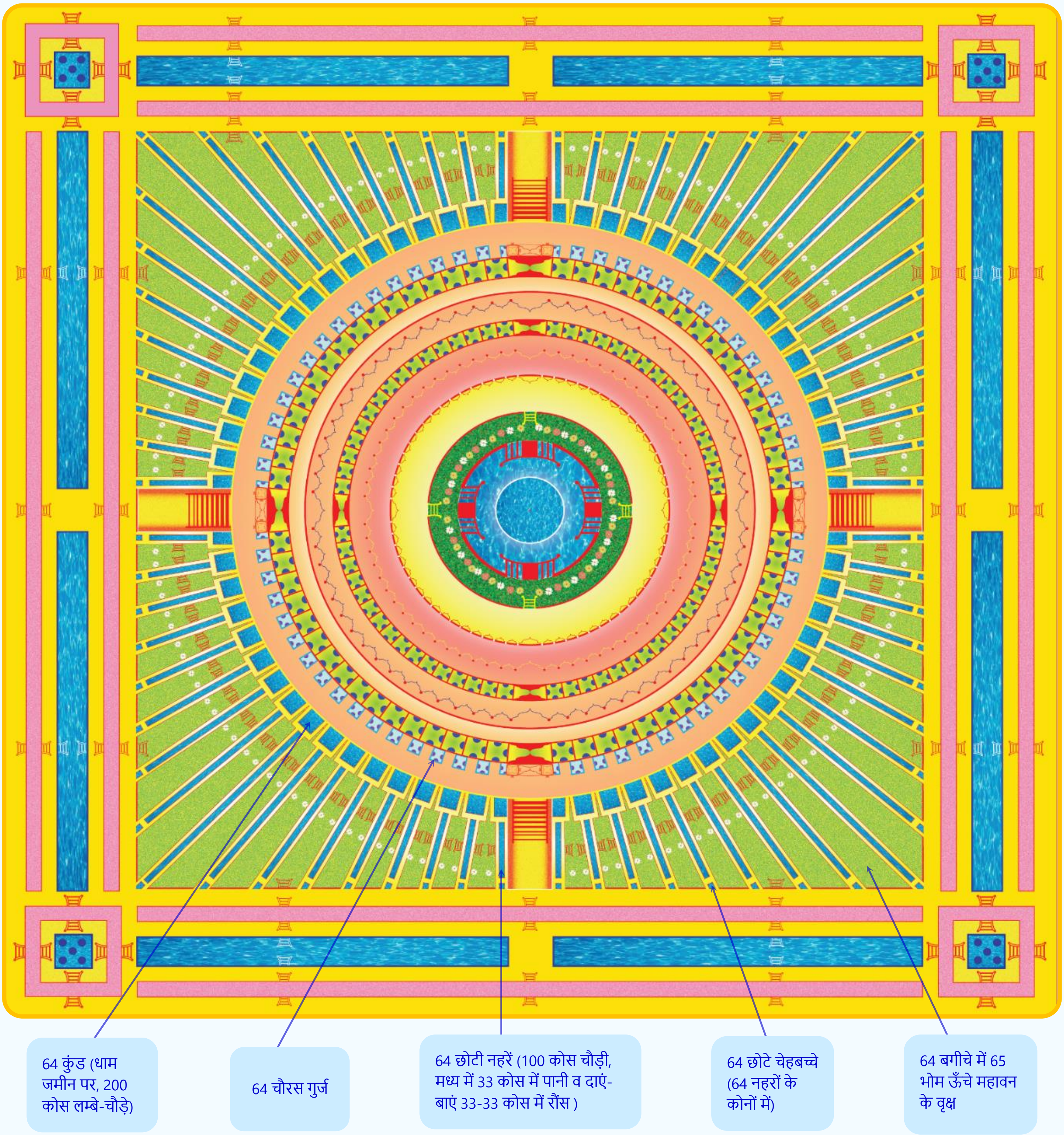

कहूं चार नेहेरें मिली चली, कहूं चार से सोले निकसत ।
कई नेहेरें सुख इन मोहोलों, धनी कब करसी प्रापत ।।